बहुत-से पैग़म्बर	एक ही मिशन
पैग़म्बर आदम पैग़म्बर नूह पैग़म्बर इबराहीम पैग़म्बर मूसा पैग़म्बर ईसा पैग़म्बर मुहम्मद इन सब पर ईश्वर की ओर से शान्ति और सलामती हो	• इन सब ने एकेश्वरवाद की धारणा पर ही फ़ोकस किया • देवी-देवताओं की जो भी ग़लत धारणाएँ थीं उन सबको रद्द किया • इस एक अकेले ईश्वर की पूजा का सही तरीक़ा सिखाया • सच्चाई और न्यायपरायणता का उदहारण बन कर दिखाया • आज्ञाकारिता के बदले जन्नत (स्वर्ग) को खोल-खोलकर बयान किया • अवज्ञा पर यातना (नरक) से सचेत किया

उसी सन्देश को लेकर ईश्वर ने हर ज़माने में हर क़ौम के अन्दर पैग़म्बरों को भेजा —कि लोग उसी एक अकेले सच्चे ख़ुदा की पूजा-उपासना करें। हालाँकि मुसलमान सभी नबियों को मानते और उनका सम्मान करते हैं, लेकिन वे उनकी पूजा नहीं करते और न ही उनके अन्दर कोई ईश्वरीय गुण मानते हैं जो ईश्वर के लिए विशेष है।

जीवन का उद्देश्य

सर्वबुद्धिमान ईश्वर ने हमें निरुद्देश्य घुमते-फिरने या केवल अपनी बुनियादी और स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ती के लिए ही पैदा नहीं किया है। इसके मुक़ाबले हमारे पास एक उद्देश्य है कि उस एक अकेले ख़ुदा को पहचानें और उसकी पूजा-उपासना करें, ताकि हम अपने स्रष्टा के मार्गदर्शन के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें। यह मार्गदर्शन हमें जीवन के सभी पहलुओं में एक तर्कपूर्ण एवं सफल जीवन व्यतीत करने के लिए सक्षम बनाता है।

यह ईश्वर की असीम बुद्धिमत्ता का ही अंश है कि उसने हमें पैदा किया और हमें अपने (ईश्वर) को पहचानने तथा अपने जीवन के अनुभव के आधार पर अपनी राय क़ायम करने के अवसर उपलब्ध कराए।

इस्लाम एक पूर्ण और व्यावहारिक जीवन व्यवस्था है जो मुसलमानों को सन्तुलित जीवन व्यतीत करने तथा समाज में एक सभ्य और सहयोगी सदस्य बनने की शिक्षा देता है। इस्लाम में इबादत की अवधारणा में केवल प्रार्थना और पूजा-उपासना करना ही नहीं आता बल्कि इस्लाम में 'इबादत' का एक व्यापक अर्थ है जिसमें जीवन के सभी कर्म आते हैं जिनको करने से ईश्वर प्रसन्न होता है। उनमें से कुछ उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं-

- ★ एक ईमानदाराना जीवन व्यतीत करना
- ★ अत्याचार का विरोध करना
- ★ यतीमों की देखभाल करना
- ★ हर काम को ख़ुदा के लिए करना
- ★ पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए उसकी देखभाल करना
- ★ सत्य बोलना
- ★ न्याय के लिए खड़े होना
- ★ माता-पिता का सम्मान करना
- ★ अपने समाज के लिए बेहतर से बेहतर योगदान देना
- ★ अपने पड़ोसियों के प्रति दयालुतापूर्ण और अच्छा व्यवहार करना
- ★ अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह पूरी करना

इबादत के सभी कामों के लिए उसकी प्रसन्नता की सख़्त ज़रूरत है और इन सभी कामों का ठीक उसी तरह किया जाना ज़रूरी है जिस तरह इस्लाम ने मार्गदर्शन किया है।

इस्लाम क्या कहता है इनके बारे में:

महिलाएँ: महिलाओं को इस्लाम में बड़ा सम्मान दिया गया है। उनके साथ प्रेम का व्यवहार किया जाना चाहिए, उनकी इज़्ज़त और सम्मान किया जाना चाहिए। वे पुरुषों का ही अंश हैं इसलिए उन पर किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं होना चाहिए और उनका सदैव ध्यान रखा जाना चाहिए।

आतंकवाद: इस्लाम समाज की भलाई और उसमें शान्ति की स्थापना के लिए लड़ने की अनुमति देता है ताकि समाज से अत्याचार को फैलने से रोका जा सके और न्याय को बढ़ावा मिल सके।

हलाल भोजन: हलाल भोजन वह है जिसे मुसलमानों को खाना जायज़ (वैध) ठहराया गया है। मुर्ग़ा या कोई जानवर इन्सानियत के साथ ज़बह किया जाना चाहिए ताकि जानवर को कम से कम कष्ट हो। जानवर को ज़बह करने से पहले ख़ुदा का नाम लिया जाना चाहिए।

मुसलमान कौन बन सकता है?

मुसलमान बनने का मतलब है, अपने सृष्टा कि श्रेष्टता और बड़ाई को स्वीकार करना और उसके हुकुम के अनुसार जीवन गुज़ारना। इसी से, इस जीवन में और परलोक में भी इन्सानको ख़ुशी और सफ़लता हासिल हो सकती है। अल्लाह ने इस्लाम का दरवाज़ा समस्त मानव जाती के लिए खोल दिया है। कोई भी व्यक्ति किसी भी वक्त इस कलिमे को मानकर मुस्लिम बन सकता है। " मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के लायक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (स) अल्लाह के पैग़म्बर हैं।"

➤ जीवन के सम्बन्ध में एक मुसलमान का दृष्टिकोण

इस्लाम का परिचय

- व्यावहारिक एवं सन्तुलित जीवन व्यवस्था
- ईश्वर से निकट एवं प्रत्यक्ष सम्बन्ध
- ईश्वर के सम्बन्ध में शुद्ध एवं स्पष्ट अवधारणा
- सार्वभौमिक एवं समयातीत सन्देश

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर

IIC

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम क्या है?

एक अकेले सच्चे ख़ुदा (जिसे अरबी में 'अल्लाह' कहते हैं) में विश्वास रखना और उसी की पूजा-उपासना करना तथा मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का अन्तिम पैग़म्बर मानना।

लगभग हर 4 में से 1 (23%) मुस्लिम है- अर्थात दुनिया में इस समय 1.5 अरब मुस्लिम हैं।

इस्लाम के माननेवाले को मुस्लिम कहते हैं चाहे वह किसी भी जाति अथवा समूह का हो।

विश्वास एवं व्यवहार

ईश्वर हमसे अपील करता है कि हम उसे उसकी निशानियों द्वारा पहचानें। ईश्वर ने हमारा यह दायित्व ठहराया है कि हम उसे पहचानें। यही हमारे जीवन की परीक्षा का अंश है। बिना सही रवैये और व्यवहार के जानकारी की कोई मात्रा किसी को ईश्वर पर विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती।

✓ वस्तुनिष्ठता & पूर्वाग्रहमुक्तता	✗ पूर्वकल्पित बाधाएँ/ विशवास न करने हेतु भ्रान्तियाँ
✓ विनम्रता & निष्कपटता	✗ गर्व और अहंकार
✓ अपने उद्देश्य पर ध्यान	✗ केवल भौतिक जगत पर ध्यान
✓ ईश्वरीय निशानियों के प्रति संग्राहकता	✗ सबको निरर्थक मानकर रद्द करना

कारण -1 सृष्टि का आरम्भ

सृष्टिकर्ता ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने हेतु पहले प्रमाण का सम्बन्ध इस सृष्टि के आरम्भ को समझने से है।

यह सृष्टि कैसे अस्तित्व में आई?

- ✗ क्या यह शून्य से अस्तित्व में आई? निश्चित रूप से नहीं। क्योंकि शून्य से शून्य ही अस्तित्व में आता है।
- ✗ क्या यह सृष्टि स्वयं ही अस्तित्व में आगई? नहीं, यह तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि यह बिलकुल ऐसे ही है जैसे कहा जाए कि माँ ने अपने-आपको स्वयं ही जन्म दिया है।
- ✗ क्या यह सृष्टि सदैव से अस्तित्व में है? नहीं, क्योंकि आधुनिक विज्ञान इस नतीजे पर पहुँचा है कि इस सृष्टि का अन्त भी है और आरम्भ भी।
- ✓ तो क्या इसे अस्तित्व में लाया गया है? हाँ, मुसलमान इस बात पर विश्वास करते हैं कि इस सृष्टि से परे कोई परम सत्ता है जो इसे अस्तित्व में लाई है,वही सृष्टा ईश्वर है।

प्रश्न: तो फिर ईश्वर को किसने पैदा किया?

उत्तर: ईश्वर को किसी ने पैदा नहीं किया। इस सृष्टि और अन्य सृष्ट से भिन्न ईश्वर नित्य एवं जीवन्त है, सदैव से है और उसका न आदि है न अन्त।

कारण - 2 ब्रह्माण्ड का क्रम

ईश्वर में विश्वास करने का दूसरा साधारण सा कारण यह है कि सृष्टि के क्रम के सम्बन्ध में निम्नलिखित तर्कों पर विचार किया जाए:

1. कोई भी चीज़ जो क्रम के साथ काम कर रही है वह बुद्धि और समझ का प्रतीक है।
2. हमारा सौर मण्डल अत्यन्त उच्च व्यवस्था, जटिल प्रणाली, नियमों और प्रतिमानों के साथ काम कर रहा है।
3. यह जो सृष्टि का उच्च क्रम है यही सृष्टा की बुद्धिमत्ता एवं सूझ-बूझ का प्रतीक है।

इस ब्रह्माण्ड में बहुत-से गुण और लक्षण स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि जीवन के आश्रय हेतु इस सृष्टि की रचना अत्यन्त सुनियोजित ढंग से की गई है। इस सृष्टि में जो पैमाइश इस समय पाई जाती है यदि इनमें मामूली सा भी अन्तर आजाए तो जीवन का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। उदाहरण के रूप में देखें :-

क्या इतनी बड़ी और इतनी जटिल कायनात बिना किसी की देख-रेख के मात्र संयोगिक घटना के रूप में बन सकती है? यहाँ पर यह बात नोट कर लेने की है कि इस्लाम वैज्ञानिक अनुसन्धान और मीमांसा को प्रोत्साहित करता है। विज्ञान की भूमिका (Role) हमें इस बात की व्याख्या करने में सहायता करती है कि इस सृष्टि में ईश्वर ने बहुत-से प्रतिमान रखे हैं और उसकी शक्ति के विस्तार एवं बुद्धिमत्ता की सराहना करती है।

कारण - 3 क़ुरआन का अवतरण

क़ुरआन ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष में अत्यन्त मज़बूत तर्क प्रस्तुत करता है। अपनी शैली, प्रज्ञा, मार्गदर्शन, वाग्मिता एवं वाक्पटुता में अद्वितीय है, इसी के साथ-साथ अपने पाठक को सम्बोधित करने में भी यह विशिष्ट विशेषता रखता है।

विश्वास करनेवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं,
और स्वयं तुम्हारे अपने-आपमें भी। तो क्या तुम देखते नहीं?- क़ुरआन 51:20,21

ईश्वर कौन है ?

इस्लाम की बहुत-सी सुन्दरताओं में से एक यह भी है कि यह ईश्वर की परिपूर्णता, महानता और विशिष्टता को स्वीकार करता है और इस सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं करता है।

ईश्वर एक और अकेला है, न उसके कोई बराबर का है, न सहभागी और न ही कोई पुत्र

सारी प्रशंसाएँ और पूजा-उपासना प्रत्यक्ष रूप में (बिना किसी मध्यस्थता के) उसी के लिए हैं।

ईश्वर परिपूर्ण भी है और दोषरहित भी- वह तमाम सीमाओं से परे और तमाम कमज़ोरियों से पाक है।

ईश्वर अत्यन्त दयावान है- उसे ज्ञान है कि हम अपूर्ण हैं और ग़लतियाँ करते हैं, किन्तु उसका रास्ता यह है कि हम अपनी ग़लतियों को पहचानें और निष्ठापूर्वक उससे क्षमा चाहें।

ईश्वर के अस्तित्व का कोई अंश उसकी सृष्टि में नहीं है और न ही ईश्वरीय गुणों में कोई उसका सहभागी।

इस्लाम ईसा मसीह को एक सम्माननीय पैग़म्बर और ईश्वर का दूत मानता है, लेकिन मुसलमान उनकी पूजा नहीं करते, क्योंकि पूजा तो केवल उसी ईश्वर की की जाएगी जिसने ईसा मसीह को और हर उस चीज़ को पैदा किया है जो अस्तित्व रखती हैं। जैसा कि ईसा मसीह के सम्बन्ध में विश्वास किया जाता है कि वे ईश्वर हैं, या ईश्वर के पुत्र हैं और त्रित्व (पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा) का अंश हैं, ये सब बातें ईश्वर के सम्बन्ध में इस्लाम की शिक्षाओं से स्पष्ट रूप से टकराती हैं।

यदि ईसा मसीह ईश्वर हैं तो प्रार्थना किससे की?

ईसाइयत की शिक्षाओं में ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं जिनमें ईसा मसीह, ईश्वर के सम्बन्ध में इस तरह बातें करते और व्यवहार करते हैं कि जैसे वे कोई अलग अस्तित्व हैं; जैसे कि ईसा मसीह ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

यह कैसे सम्भव है कि ईश्वर पूर्ण भी हो और अपूर्ण भी?

ईसा मसीह खाते-पीते, सोते-जागते और सीमित ज्ञान रखते थे। ये सारे गुण ईश्वर के लिए उपयुक्त नहीं हैं। ईश्वर के अन्दर सारे गुण पूर्ण हैं जबकि मनुष्य इसके विपरीत।

"ईश्वर के पुत्र" से वास्तव में क्या तात्पर्य है?

हमें ज्ञात होता है कि बाइबल की भाषा में "ईश्वर का पुत्र" के जो पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं, वे वास्तव में सांकेतिक रूप में बहुत-से सच्चे और न्याय-परायण लोगों के लिए प्रयुक्त हुए हैं न कि विशेष रूप से ईसा मसीह के लिए, ईश्वर इससे बहुत परे है कि शरीर रूप और शाब्दिक अर्थों में उसका कोई पुत्र हो।

प्रश्न: यदि ईश्वर कुछ भी कर सकता है तो वह मनुष्य क्यों नहीं बन सकता?

उत्तर: ईश्वर का एक गुण है कि वह सदैव से पूर्ण है और इस पूर्णता के गुण में वह कोई समझौता नहीं करता है. अतः हम कह सकते हैं कि ईश्वर कभी अनीश्वरीय कार्य नहीं करता। इसलिए यदि ईश्वर मनुष्य बन गया और उसने मानवीय गुण ग्रहण कर लिए तो फिर वह ईश्वर नहीं रहेगा।